थकावट

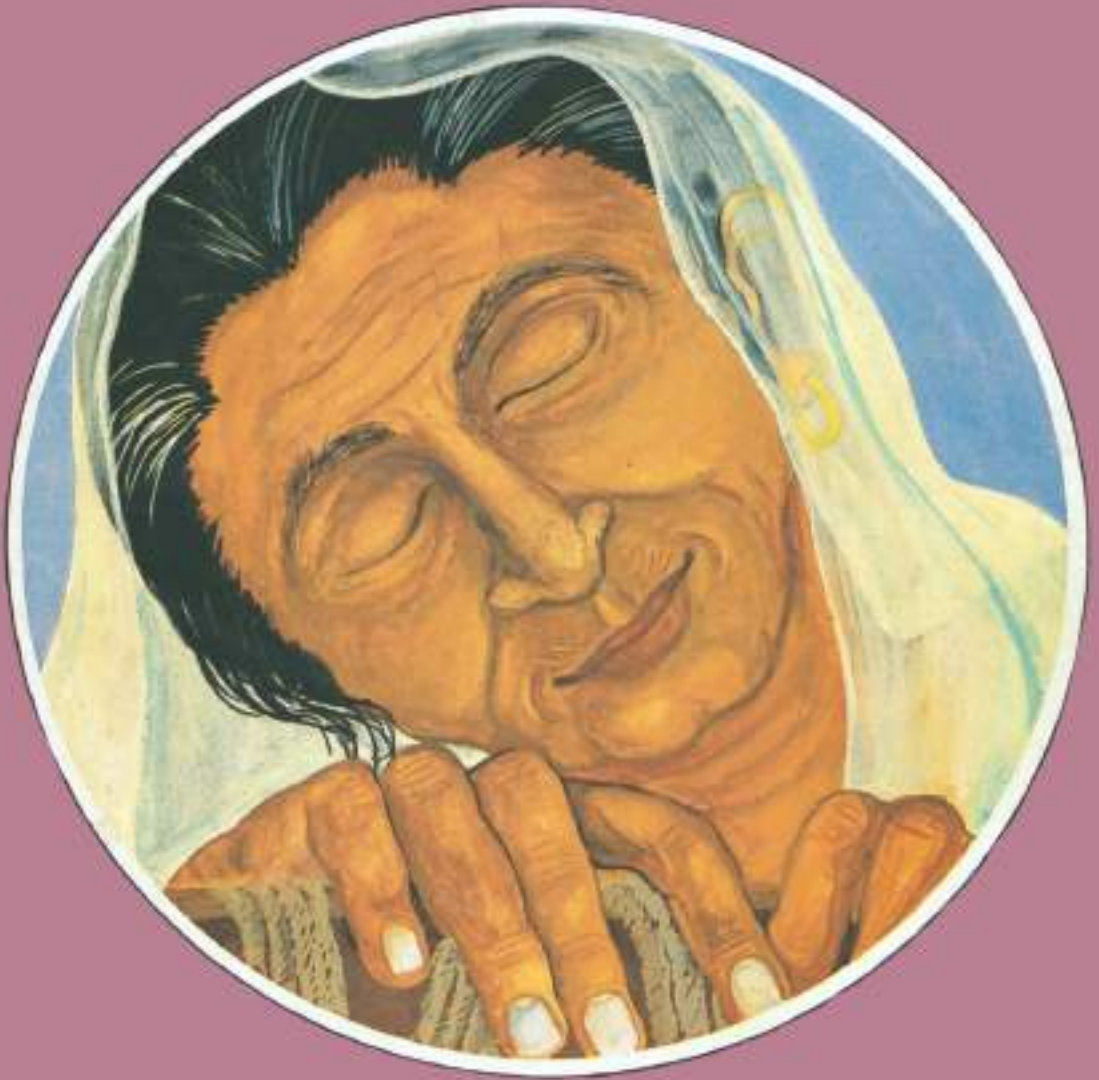

चित्राँकन: तापोशी घोषाल

लेखक: गुरबचन सिंह भुल्लर

गुरबचन सिंह भुल्लर

गुरबचन सिंह भुल्लर (जन्म 1937) का बचपन पंजाब के भटिंडा ज़िले में बीता। पंजाबी साहित्य में इनकी रुचि अपने पिता के कारण बढ़ी जो हर रोज़ अपने बच्चों को कुछ न कुछ ज़रूर पढ़कर सुनाते थे।

बीस वर्ष की आयु में ही भुल्लर जी ने कविताएँ, लघु कहानियाँ और बच्चों की कहानियाँ लिखनी शुरू कर दीं। अपनी लेखनी द्वारा वे सामाजिक समस्याओं और कुरीतियों से लड़ते हैं - खासकर जीवन देने वाली और लालन-पालन करने वाली नारी के प्रति समाज के रूखे व्यवहार से! अपनी सीधी-सादी माँ की छवि सदा उन्हें लिखने के लिए प्रोत्साहित करती है।

थकावट में आसो एक ऐसी ही सीधी-सादी मगर निडर और आत्मविश्वासी नारी है।

KATHA

पहला संस्करण 1994, दूसरा संस्करण 2004, तीसरा संस्करण 2009
चौथा संस्करण 2010
कृति स्वामित्व © कथा, 1994
सर्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।
नई दिल्ली द्वारा मुद्रित
ISBN 978-81-85586-18-2

कथा एक पंजीकृत अलाभकारी संस्था है। कथा का मुख्य उद्देश्य है, बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रुचि एवं इससे मिलती खुशी को बढ़ावा देना।

ए-3 सर्वोदया एनक्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग, नई दिल्ली–110017
दूरभाषः 2652 4350, 2652 4511
फैक्सः 2651 4373
ई मेलः kathakaar@katha.org
इंटरनेटः http://www.katha.org

कथा नियमित रूप से पेड़ लगाती है उस लकड़ी के बदले, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज़ बनता है।
इस किताब की बिक्री से मिली राशि का 10% अल्पाधिकारी बच्चों के एक स्कूल, कथाशाला को दिया जाएगा।

थकावट

लेखक
गुरबचन सिंह भुल्लर

चित्राँकन
तापोशी घोषाल

कथा, नई दिल्ली

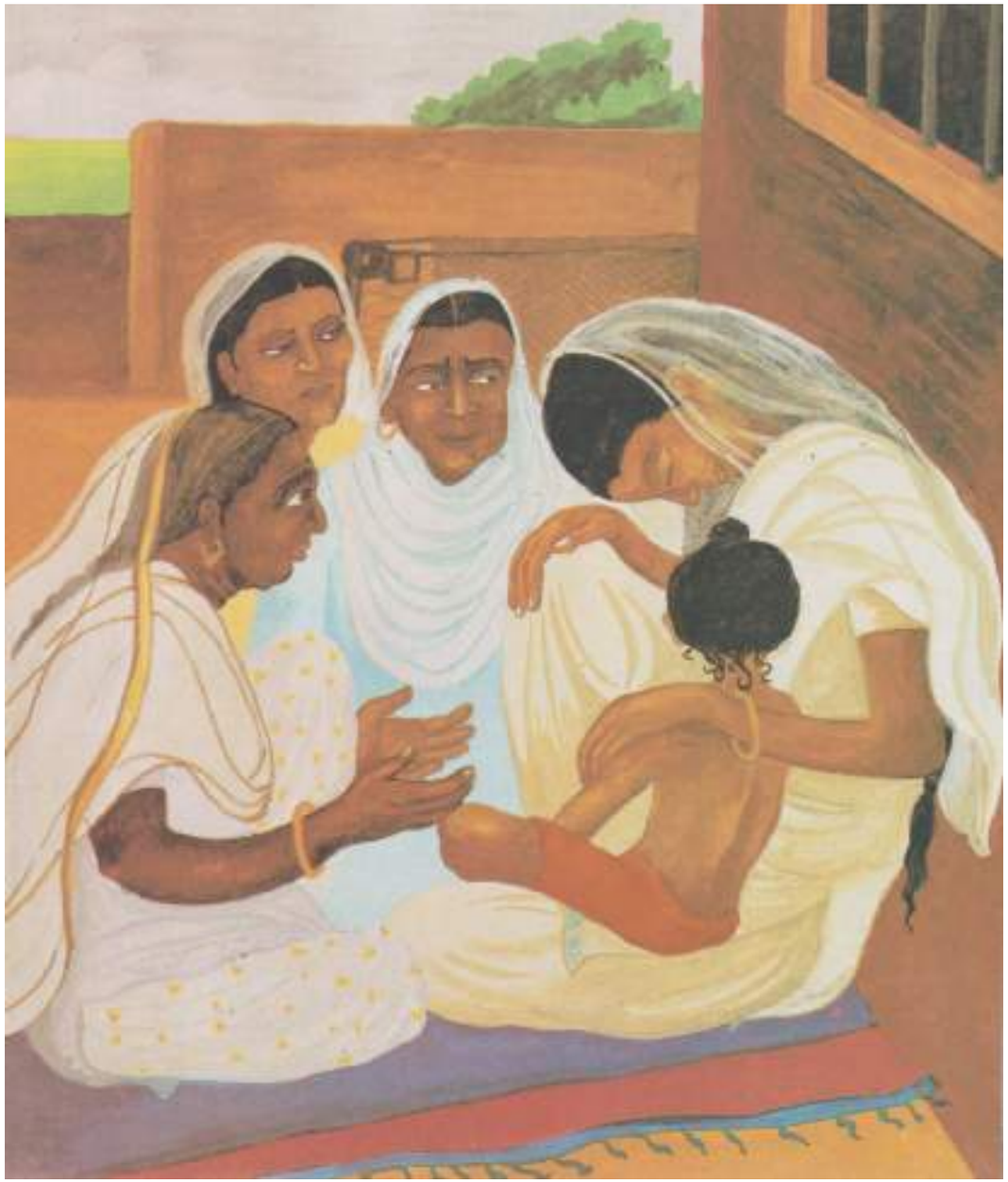

3

आसो की उमर अभी तीस साल की भी नहीं थी।

उसका पति, सुच्चा सिंह, मर गया। सारा गाँव उसके विधवा होने पर दुखी था।

उसका लड़का गुरदेव अभी सात-आठ साल का ही था। आसो के लिए अब चारों ओर अँधेरा था।

ध्यान दें!

अलग-अलग मात्राओं के साथ, अक्षर 'क'

मात्रा	शब्द
ा (आ)	उसका
े (ए)	उसके

4

आसो का भाई जग्गर सिंह उसके पास रहने लगा। लेकिन उसे भी अपने गाँव वापिस जाना था।

उसने आसो को सलाह दी, "खेती का सामान बेच दे, ज़मीन बटाई पर दे दे।"

तब एक दिन गुरदेव को खाना खिलाते हुए आसो ने सोचा, "गुरदेव बड़ा होगा। खेती का काम खुद करेगा। तब सारा सामान फिर से जुटाना पड़ेगा।"

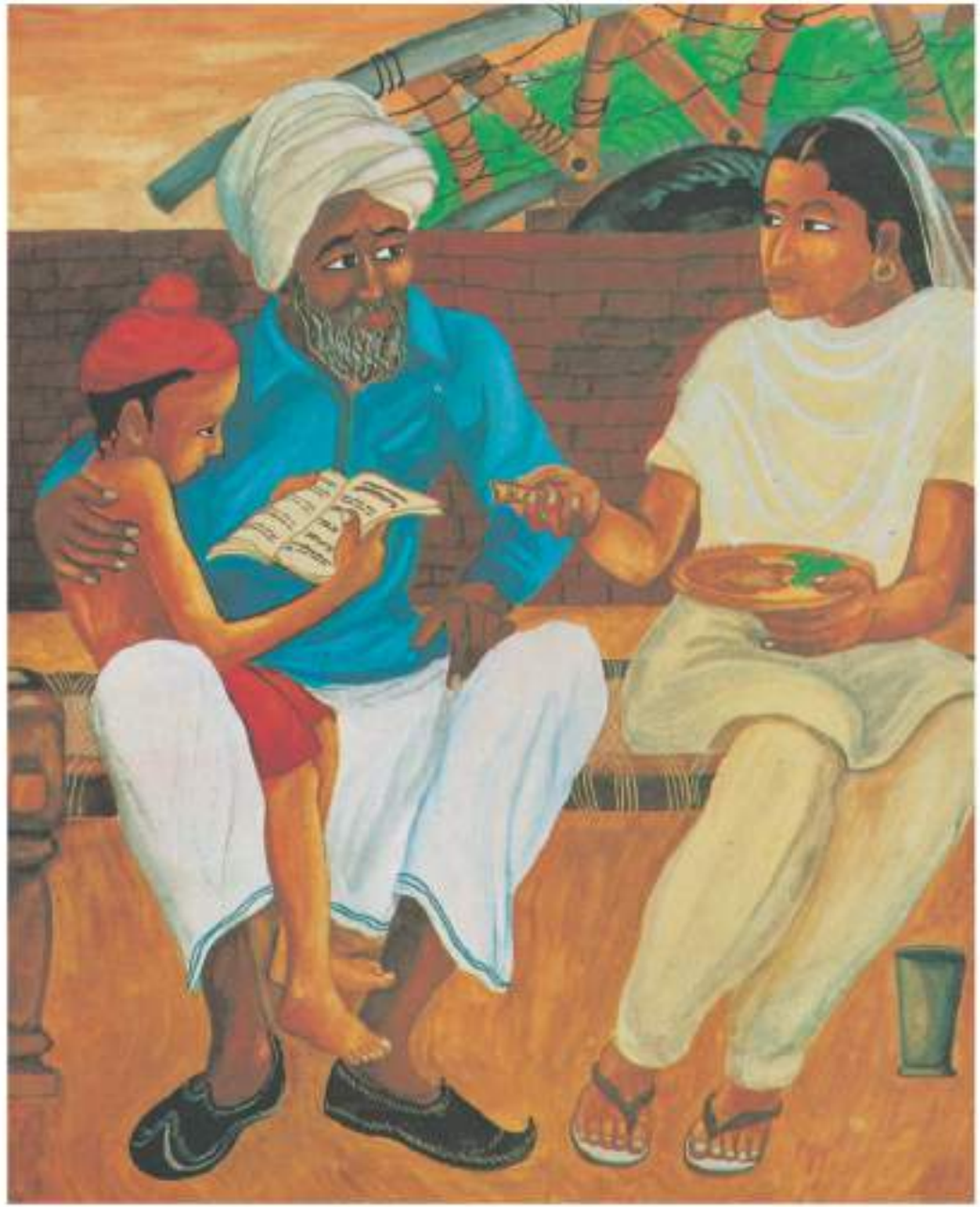

ध्यान दें!

अलग-अलग मात्राओं के साथ, अक्षर 'स'

मात्रा	**शब्द**
ा (आ)	सारा, सामान
ो (ओ)	आसो

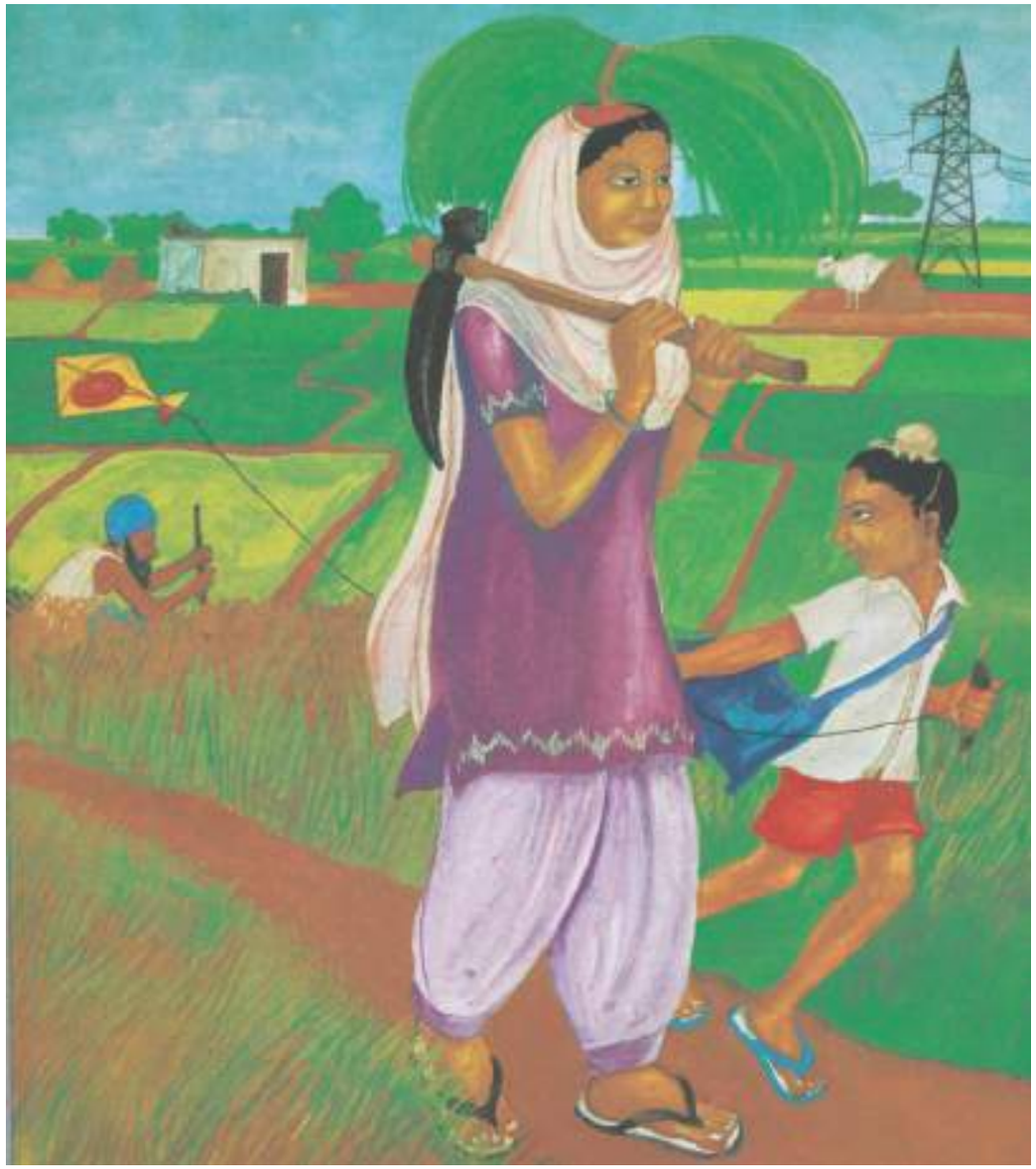

उसने फैसला किया कि वह खुद खेती करेगी।

आसो ने जग्गर सिंह को अपना फैसला सुनाया। वह आसो की बात से सहमत था।

अब आसो खेती का सारा काम खुद करती। गुरदेव को माँ और बाप, दोनों का प्यार देती।

काम करते हुए आसो को सुच्चा सिंह की बहुत याद आती। तब वह उदास हो जाती। पर गुरदेव को बड़ा होता हुआ देख उसका दुख कम हो जाता। एक नया जोश भर जाता।

ध्यान दें!

अलग-अलग मात्राओं के साथ, अक्षर 'द'

मात्रा	**शब्द**
ु (उ)	दुख
े (ए)	देख, गुरदेव

8

कुछ साल बाद गुरदेव जवान हो गया। गाँव के बुजुर्गों ने आसो को समझाया, "बेटी! तुमने बहुत दुख सहा है। लड़का जवान हो गया है। अब तुम अपनी थकावट उतारो।"

आसो घूँघट में से जवाब देती, "बाबाजी, आपका हाथ सिर पर रहे। फिर कोई मुश्किल नहीं।"

औरतें कहतीं, "अरी आसो! तुम काम करते-करते थक गई हो। तुम आराम करो। मर्दों का काम अब मर्दों पर छोड़ दो।"

आसो उनकी बात टाल जाती, "बहन, काम से कैसी थकावट।"

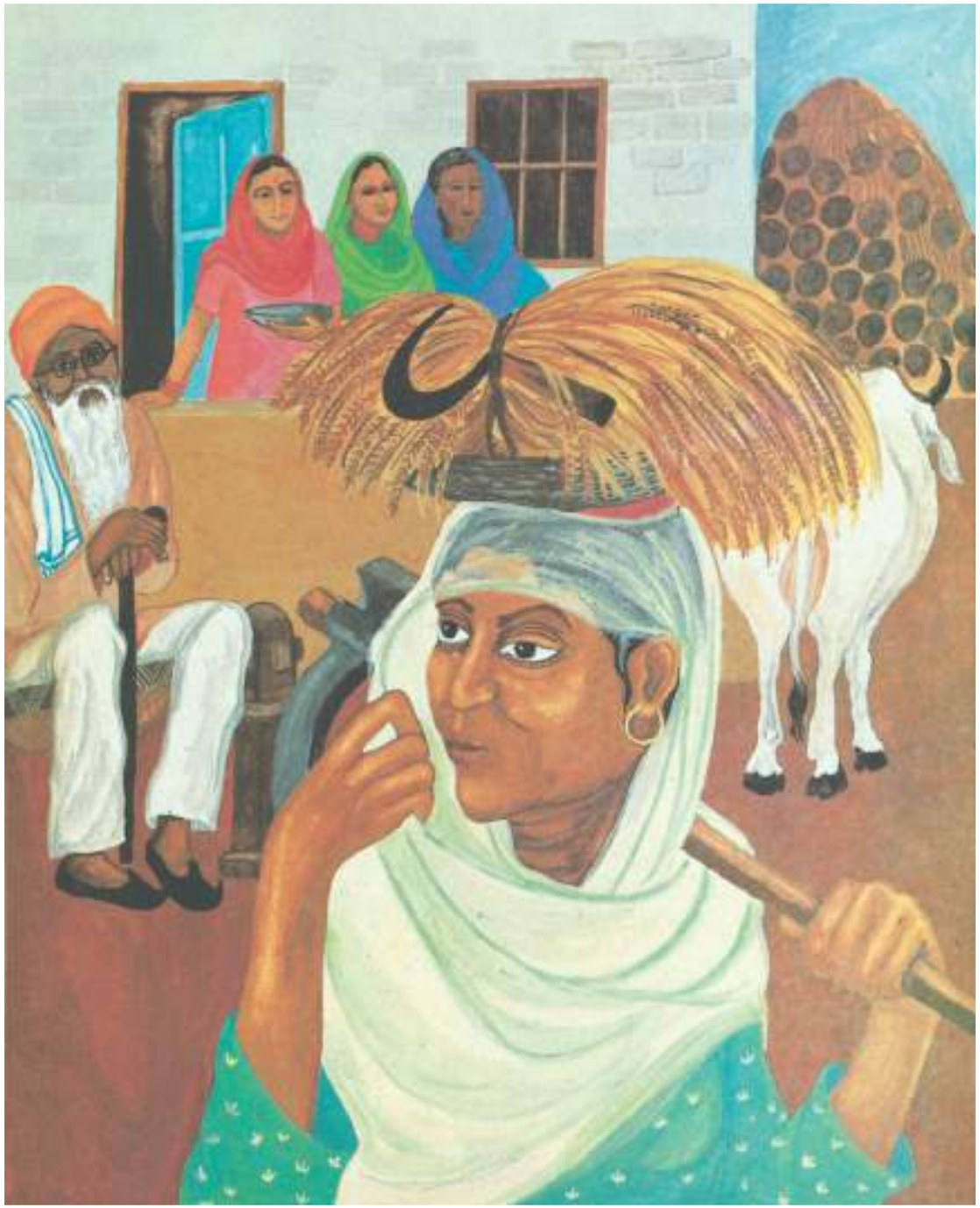

ध्यान दें!

अलग-अलग मात्राओं के साथ, अक्षर 'त'

मात्रा	शब्द
ा (आ)	उतारो
ी (ई)	जाती
े (ए)	देती, करते

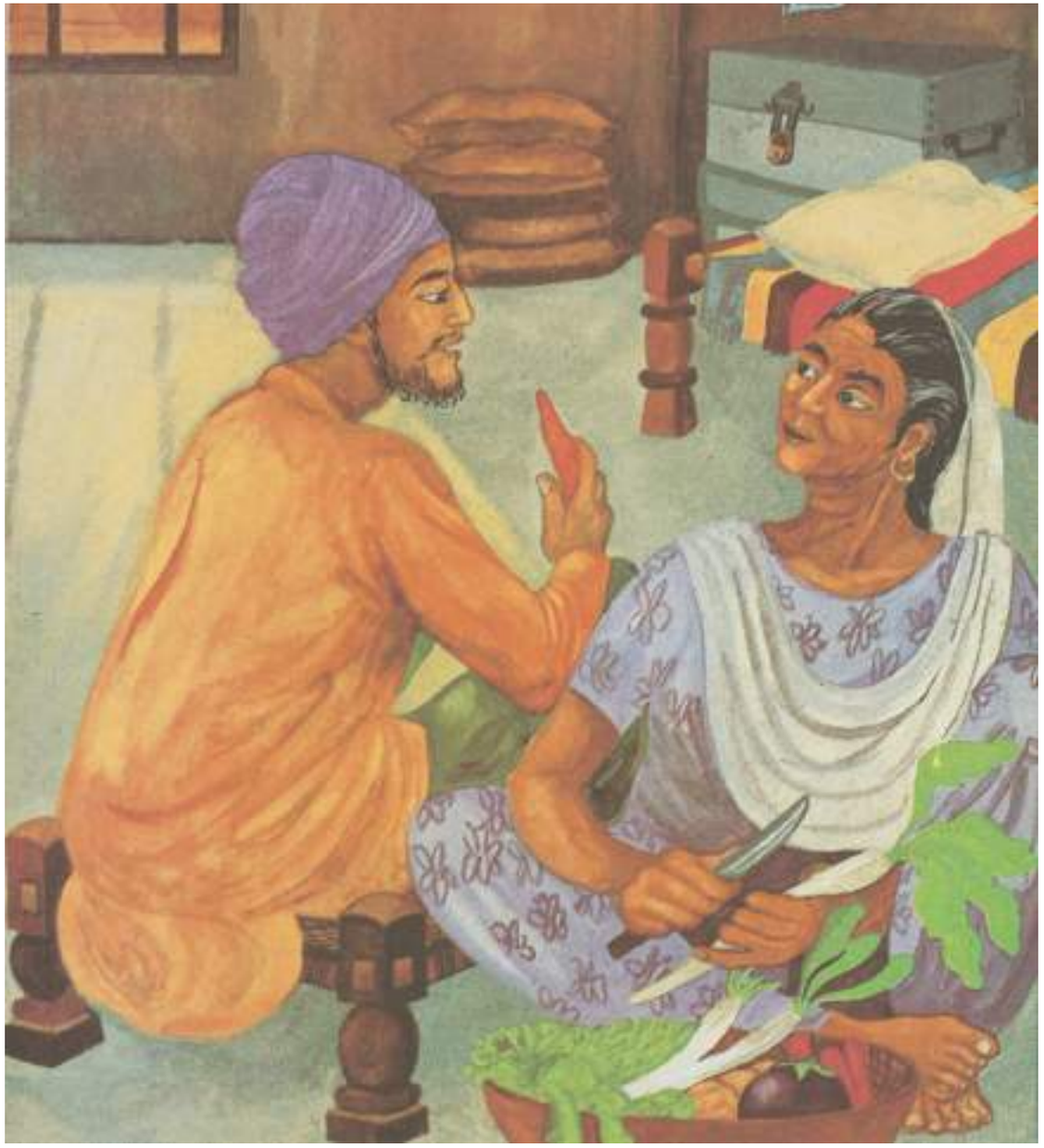

सभी लोग इसी तरह की सलाह देते। पर आसो को कभी थकावट महसूस न होती। आसो के लिए गुरदेव अभी भी छोटा बच्चा था। वह समझती थी कि गुरदेव अभी जीवन की कठिन राह पर अकेला नहीं चल सकता।

आज आसो ने खेतों को पानी देना था। गुरदेव ने उसे आराम करने को कहा और कहा कि वह पानी खेतों में अकेले दे देगा।

ध्यान दें!

अलग-अलग मात्राओं के साथ, अक्षर 'ग'

मात्रा	**शब्द**
ा (आ)	लगा, लेगा
ु (उ)	गुरदेव

12

आसो हँसकर बोली, "तेरे जितनों से अभी नाक तक नहीं साफ़ होती। तू क्या अकेले पानी देगा।"

गुरदेव ने सलाह दी, "अच्छा माँ, मेरा दोस्त मोहन आज घर पर ही है। उसे ले जाता हूँ।"

पर आसो ने कहा, "नहीं, नहीं। किसी की मदद क्या लेनी। हम खुद ही देंगे पानी।" उसने गुरदेव को चीनी-पत्ती बाँधने को कहा। खुद घड़ी उठाकर मीराब से समय मिलाने चल दी।

ध्यान दें!

अलग-अलग मात्राओं के साथ, अक्षर 'म'

मात्रा	**शब्द**
ि (इ)	मिलाने
ी (ई)	मीराब
ो (ओ)	मोहन

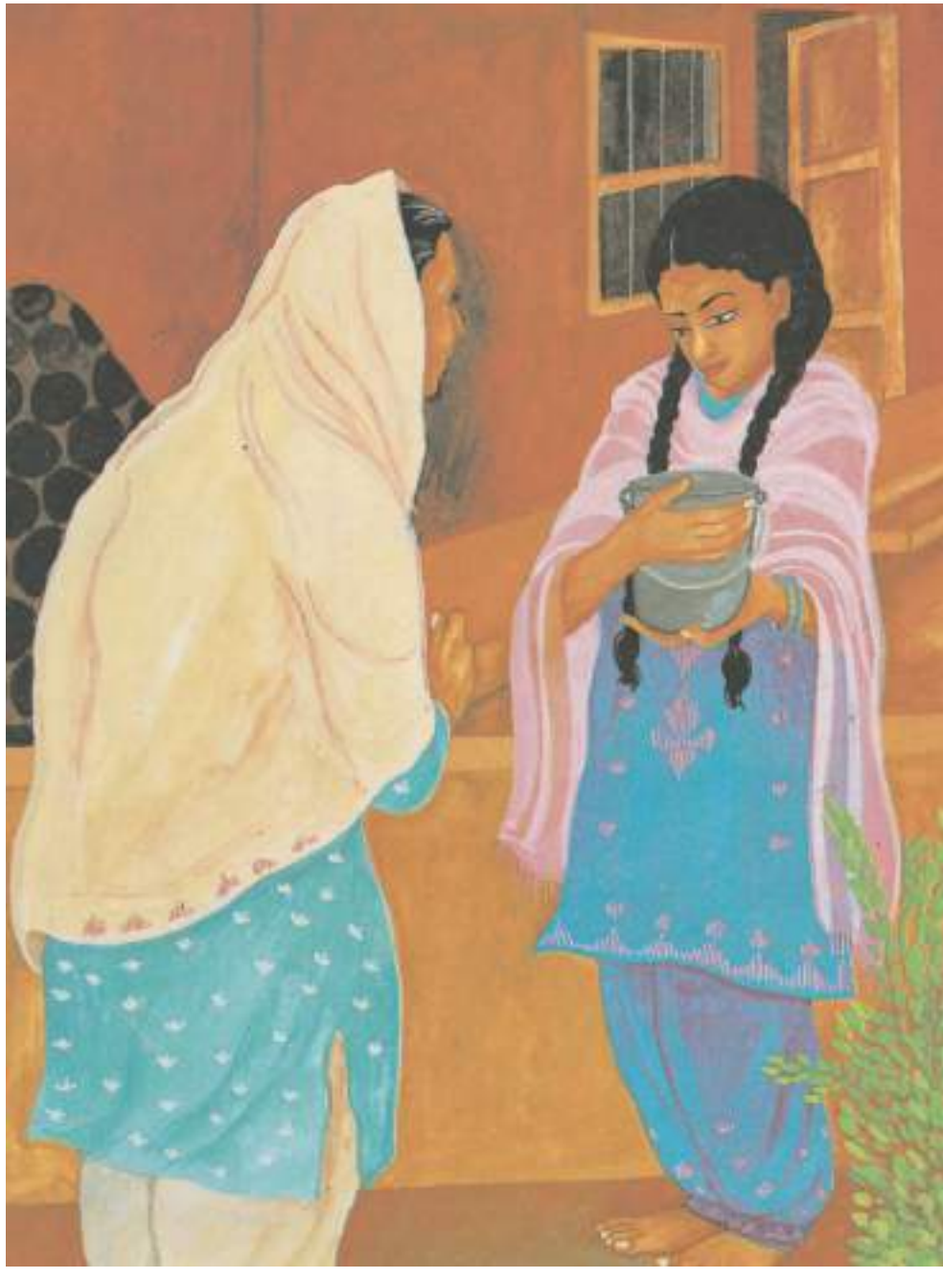

15

आसो घड़ी मिलाकर वापिस आई। उसने देखा कि पड़ोसी की लड़की भूरो लस्सी का डोल लेकर उनके घर से निकल रही थी।

भूरो उसे देखकर एक बारगी घबरा गई। मगर सम्भलकर बोली, "चाची, मैं लस्सी लेने आई थी। तुम कहाँ गई थीं?"

आसो ने जवाब दिया, "मैं घड़ी मिलाकर लाई हूँ। आज पानी लगाना है।"

ध्यान दें!

अलग-अलग मात्राओं के साथ, अक्षर 'ल'

मात्रा	शब्द
ा (आ)	लाई, मिलाकर
ी (ई)	बोली
े (ए)	लेने

16

आसो ने सोचा कि भूरो उसे देखकर घबराई क्यों?

जब वह घर के अन्दर गई तो खिड़की से उसकी नज़र गुरदेव पर पड़ी। गुरदेव के हाथ में नया कढ़ा हुआ रूमाल था।

आसो के खाँसने पर गुरदेव ने चौंककर रूमाल जेब में डाल दिया। बोला, "चलो, माँ, चलें। कहीं देर न हो जाए।"

ध्यान दें!

अलग-अलग मात्राओं के साथ, अक्षर 'ह'

मात्रा	**शब्द**
ा (आ)	हाथ
ी (ई)	कहीं

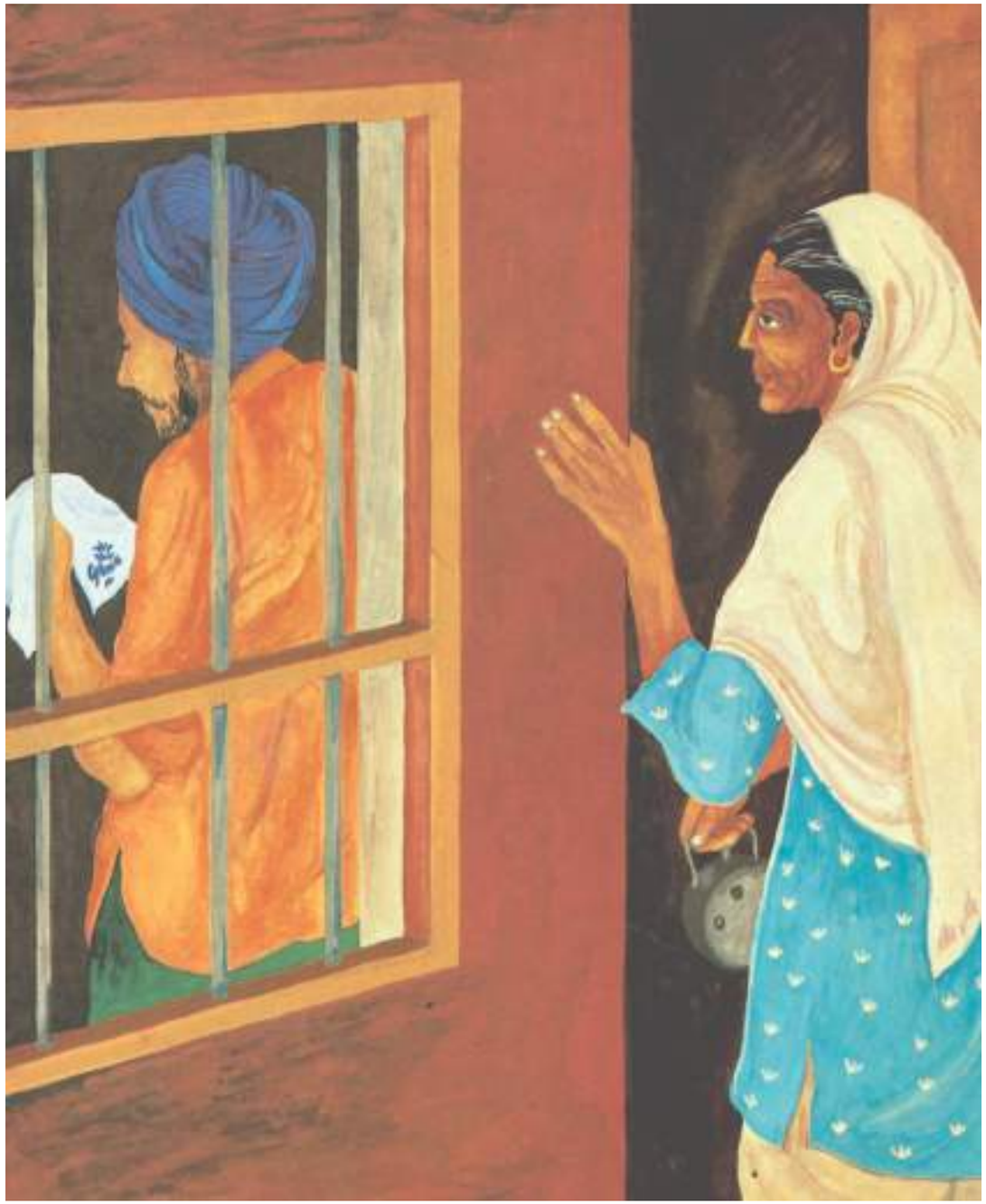

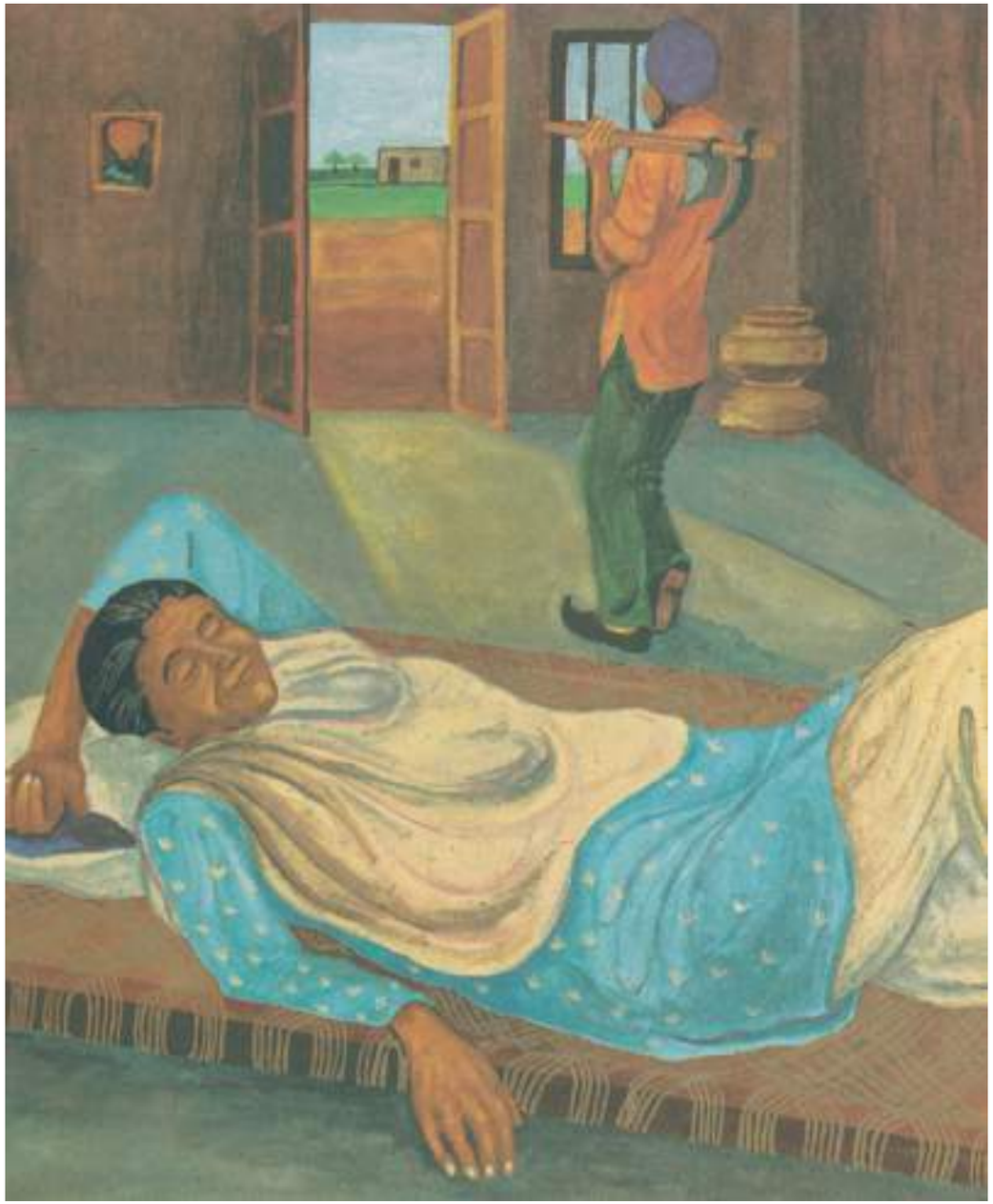

19

आसो सब समझ गई। उसका बेटा अब जवान हो गया था।

आसो ने अपने बेटे से कहा, “बेटा, अब तुम ही सम्भालो सब कुछ।” और वह चारपाई पर लेट गई। उसे लगा जैसे बरसों की थकावट से वह चूर-चूर हो चुकी है - मंज़िल पर पहुँचने की मीठी-मीठी थकावट!

ध्यान दें!

अलग-अलग मात्राओं के साथ, अक्षर ‘च’

मात्रा	**शब्द**
ा (आ)	चारपाई
ु (उ)	चुकी
ू (ऊ)	चूर-चूर

पढ़ें और समझें

मात्राओं के अनुसार कहानी में से छाँटे गए कुछ शब्द।

आ	ा	काम, नाक, पास, याद लगा, नया, सलाह, घबरा आराम, सामान, चारपाई, बाबाजी
इ	ि	फिर, दिल, निकल, विधवा कठिन, मंज़िल, वापिस, खिलाया
ई	ी	तीस, मीराब कभी, घड़ी, कहती, लड़की चीनी, मीठी
उ	ु	कुछ, खुद, जुटाना, सुनाया बुजुर्ग
ऊ	ू	घूम, घूँघट, महसूस, चूर-चूर
ए	े	देख, देर, बेटा, लेकर अकेला, उठाए, लगाएगा
ऐ	ै	कैसे, कैसी, फ़ैसला
ओ	ो	दो, जोश, डोल, दोस्त आसो, पड़ोसी छोड़ो, सोचो
औ	ौ	चौंक

कुछ आधे अक्षर

सुच्चा में च् (आधे च) का प्रयोग किया गया है।

च् का प्रयोग करने वाले कुछ और शब्द हैं:

बच्चा, अच्छा, कच्चा, तुच्छ

जग्गर में ग् (आधा ग) का प्रयोग किया गया है।

ग् का प्रयोग करने वाले कुछ और शब्द हैं:

ग्यारह, ग्वाला, दुग्ध, अग्नि

अन्दर में न् (आधा न) का प्रयोग किया गया है।

न् का प्रयोग करने वाले कुछ और शब्द हैं:

हिन्दी, चिन्ह, सामान्य, भिन्न

सम्भल में म् (आधा म) का प्रयोग किया गया है।

म् का प्रयोग करने वाले कुछ और शब्द हैं:

सम्भल, सम्भव, हिम्मत, निम्न

लस्सी में स् (आधा स) का प्रयोग किया गया है।

स् का प्रयोग करने वाले कुछ और शब्द हैं:

रस्सी, स्वस्थ, स्थान, रास्ता

प्यार में प् (आधा प) का प्रयोग किया गया है।

प् का प्रयोग करने वाले कुछ और शब्द हैं:

अप्सरा, प्यास, समाप्त, गोलगप्पा

क्या में क् (आधा क) का प्रयोग किया गया है।

क् का प्रयोग करने वाले कुछ और शब्द हैं:

मक्खी, ढक्कन, अक्सर, क्यों

जोड़े बनाएँ!

इन दोनों डिब्बों में आठ शब्द समान हैं।
इन शब्दों को खोजकर समान
शब्दों के जोड़े बनाएँ।

राह जवान रूमाल चारपाई बाप आसो दिल मीराब अकेला पड़ोसी लड़का बाबाजी बेटा सलाह लड़की मदद	बाबाजी आसो राह रूमाल पति लस्सी साल नज़र वापिस अकेला मीराब उदास सहमत फ़ैसला सलाह चारपाई

सही जवाब:
चारपाई सलाह अकेला राह आसो रूमाल बाबाजी मीराब

शब्द बनाएँ!

सा म व ा प पि चा र अ रा स वा ल ति त आ ह के ला स्सी सो

इन पदों (मात्रा सहित अक्षर) से हमने ये आठ शब्द बनाएँ हैं।

अकेला वापिस हरा रस्सी सारा राह आम रात

इस तरह आप भी कई शब्द बना सकते हैं। कम-से-कम और
दस शब्द बनाने की कोशिश करें।

अपनी शब्दावली बढ़ाएँ

दाएं ओर दिए गए शब्दों में से एक शब्द बाएं ओर दिए गए शब्द का अर्थ है। सही अर्थ बताएँ। (किताब पर चिन्ह न लगाएँ। एक अलग कागज़ पर अपने जवाब लिखें और खेल के अंत में अपने जवाब मिलाएँ। हर सही जवाब के लिए अपने को एक अंक दें।)

1.	मुश्किल	क	आराम	5.	फ़ैसला	क	निर्णय
		ख	कठिन			ख	रुमाल
		ग	आसान			ग	सामान
2.	महसूस	क	अनुभव करना	6.	राह	क	याद
		ख	जुटाना			ख	सारा
		ग	मिलना			ग	रास्ता
3.	बुजुर्ग	क	खानदान	7.	साल	क	खास
		ख	परिवार			ख	वर्ष
		ग	बड़े-बूढ़े			ग	जन्मदिन
4.	बेटा	क	पुत्र	8.	सलाह	क	परामर्श
		ख	लड़का			ख	मंत्र
		ग	बाबाजी			ग	दुआ

आपके नम्बर:

6 से 8 अंक - बहुत बढ़िया

4 से 6 अंक - बढ़िया

4 से कम - पढ़ने का और अभ्यास करें

सही जवाब:

1. ख 2. क 3. ग 4. क 5. क 6. ग 7. ख 8. क

ये कौन हैं?

सही जवाबों पर सही का निशान लगाएँ।

(किताब पर चिन्ह न लगाएँ। अपने जवाब एक अलग कागज़ पर लिखें।)

गुरदेव की माँ

जग्गर सिंह की बहन

भूरो की बहन

सुच्चा सिंह की बहन

जग्गर सिंह का भाई

आसो का बेटा

भूरो का बाप

सुच्चा सिंह का बेटा

गुरदेव की दोस्त

जग्गर सिंह की पत्नी

आसो की बहन

आसो की पड़ोसी की बेटी

सुच्चा सिंह का बेटा

गुरदेव का दोस्त

गुरदेव का मामा

आसो का भाई

सीधी-सादी आसो पर आ गई है एक बड़ी ज़िम्मेदारी। अपने खेत की देख-रेख और नन्हें बेटे की परवरिश। क्या वह यह अकेली कर पाएगी?

सर्वश्रेष्ठ कथामाला भारत के महान लेखकों की एक शानदार कहानी श्रृंखला है। आइऐ अपने देश के साहित्य का खजाना खोजें, इन कहानियों और इनसे जुड़े खेलों और अभ्यासों के ज़रिए!

इस पुस्तक की कहानी सुप्रसिद्ध लेखक **गुरबचन सिंह भुल्लर** ने लिखी है।